नैक (NAAC) द्वारा "A" ग्रेड प्राप्त

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Wardha

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

ज्ञान शांति मैत्री

जनसंपर्क विभाग- Ph./Fax: 07152-252651 मो.9960562305 इ-मेल: mgahvpro@gmail.com
वेबसाइट : www.hindivishwa.org

भाषाओं के विकास में तकनीकी का प्रयोग बढ़ाना होगा – कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र

हिंदी विवि में प्राकृतिक भाषा संसाधन पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का उदघाटन

वर्धा, 17 अगस्त 2016: भाषा हमें बंधनों से मुक्त करती है। भारतीय भाषाओं के पारस्परिक संबंधो को समझकर भाषा संसाधन की क्षमताओं को पहचानना होगा। भाषा का विस्तार एवं विकास करने के लिए तकनीक के प्रयोग को बढ़ाना चाहिए। उक्त प्रतिपादन महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने किये। वे प्रौद्योगिकी अध्ययन केंद्र एवं कंप्यूटेशनल भाषाविज्ञान विभाग द्वारा

प्राकृतिक भाषा संसाधन : हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं के नवीन पक्षों के संदर्भ में विषय पर 17 से 19 अगस्त को आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी के उदघाटन समारोह में बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता भाषा विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. हनुमान प्रसाद शुक्ल ने की।

समारोह में मंच पर मुख्य वक्ता के रूप में दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रो. रमेश चंद्र शर्मा, प्रतिकुलपति प्रो. आनंद वर्धन शर्मा, कुलसचिव डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र, सीआईआईएल की प्रो. इलाकुमार, टीएलसीएचएस के अध्यक्ष तथा संयुक्त निदेशक प्रो. अरबिंद कुमार झा, संगोष्ठी संयोजक पीयूष प्रताप सिंह, संगोष्ठी निदेशक प्रो. विजय कुमार कौल उपस्थित थे।

मुख्य वक्ता प्रो. रमेश कुमार शर्मा ने कहा कि कंप्यूटर और मानव मस्तिष्क के संयोजन से भाषा को

किस प्रकार से विस्तारित किया जाए इसपर काम किया जाना चाहिए। प्रो. इलाकुमार ने मनुष्य और मशीन के

अंतर्संबंध पर अपनी बात रखी। उन्होंने कहा कि प्राकृतिक भाषा संसाधन का तीव्र गति से विकास हो रहा है।

अध्यक्षीय वक्तव्य में प्रो. हनुमान प्रसाद शुक्ल ने कहा कि भारतीय भाषाओं व हिंदी को लेकर प्राकृतिक भाषा

संसाधन पर काम होना चाहिए।

अतिथियों का स्वागत पुष्पगुच्छ किया गया। कार्यक्रम का स्वागत वक्तव्य पीयूष प्रताप सिंह ने दिया।

संगोष्ठी का परिचय वक्तव्य प्रो. विजय कुमार कौल ने दिया। संचालन डॉ. धनजी प्रसाद ने किया तथा आभार

कुलसचिव डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र ने माना।

इस अवसर पर ऋषभ देव शर्मा, प्रो. देवराज, प्रो. अन्नपूर्णा चर्ल, प्रो. के. के. सिंह, डॉ. अनिल कुमार

पांडे, डॉ. अनिल कुमार दुबे, डॉ. अनवर अहमद सिद्दीकी, अनिर्बाण घोष, सन्मति जैन, गोपाल राम, सत्येंद्र अवस्थी आदि सहित शोधार्थी, विद्यार्थी तथा देशभर से आए प्रतिभागी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।